इकाई– 1

समावेशी शिक्षा की प्रस्तावना

INTRODUCTION TO INCLUSIVE EDUCATION

1.1. समावेशी शिक्षा (INCLUSIVE EDUCATION)

1.1.1. समावेशी शिक्षा की अवधारणा (Concept of Inclusive Education)

समावेशी शिक्षा कक्षा में विविधताओं को स्वीकार करने की एक मनोवृत्ति है जिसके अन्तर्गत विविध क्षमता वाले बालक सामान्य शिक्षा प्रणाली में एक साथ अध्ययन करते हैं। समावेशित शिक्षा दर्शन के अन्तर्गत प्रत्येक बालक अद्वितीय है और उसे अपने सहपाठियों की भाँति विकसित करने के लिए कक्षा में विविध प्रकार के शिक्षण की आवश्यकता हो सकती है। बालक के पीछे रह जाने पर उनको दोषी नहीं ठहराया जा सकता है बल्कि उन्हें कक्षा में भली प्रकार समाहित न कर पाने का जिम्मेदार अध्यापक को स्वयं समझना चाहिए। जिस प्रकार हमारा संविधान किसी भी आधार पर किए जाने वाले भेद–भाव का निषेध करता है, ठीक उसी प्रकार समावेशित शिक्षा विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों, शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक आदि कारणों से उत्पन्न किसी बालक को, विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त उन बालकों को भिन्न देखे जाने की बजाय स्वतंत्र अधिगमकर्ता के रूप में देखती है।

समावेशी शिक्षा में प्रतिभाशाली बालक तथा सामान्य बालक एक साथ कक्षाओं में पूर्ण समय या अर्द्धकालिक समय में शिक्षा ग्रहण करते हैं। इस प्रकार समायोजन, सामाजिक या शैक्षिक अथवा दोनों को सम्मिलित करता है। कुछ शिक्षाविद् ऐसा सोचते हैं कि समावेशी शिक्षा अपंग बालकों हेतु सामान्य स्कूल में स्थापित करनी चाहिए जहाँ उन्हें विशिष्ट शिक्षण में सहायता तथा सुविधाएँ दी जाती हैं। समावेशी शिक्षा का आन्दोलन सभी नागरिकों की समानता के अधिकार को पहचानने और सभी बालकों को विशिष्ट आवश्यकताओं के साथ–साथ शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने पर बल देता है। कहा जाता है कि उन्हें (बाधित बालकों को) कम नियन्त्रित तथा अधिक प्रभावशाली वातावरण में शिक्षा देनी चाहिए। कम प्रतिबन्धित वातावरण जो बाधित बालकों को चाहिए केवल सामान्य शिक्षण संस्थाओं में ही दिया जा सकता है। इस प्रकार समावेशी शिक्षा, अपंग बालकों की शिक्षा सामान्य स्कूल तथा सामान्य बालकों के साथ कुछ अधिक सहायता प्रदान करने की ओर इंगित करती है। यह शारीरिक तथा मानसिक रूप से बाधित बालकों को सामान्य बालकों के साथ सामान्य कक्षा में शिक्षा प्राप्त कर एवं विशिष्ट सेवाएं देकर विशिष्ट आवश्यकताओं को प्राप्त करने के लिए सहायता करती है।

Scanned by TapScanner

स्वतंत्रता के बाद शिक्षा प्रणाली की क्या उपलब्धि रही है? यदि हम इस ओर ध्यान दें तो सम्भवतः हमें कुछ संतोषजनक आँकड़े मिलेंगे। आज भारत की विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था चीन के पश्चात् विश्व की दूसरी सबसे बड़ी शिक्षा व्यवस्था है। जहाँ लगभग 10 लाख स्कूलों में 2025 लाख बच्चों को पढ़ाने का काम लगभग 55 लाख शिक्षक कर रहे हैं। 82 प्रतिशत रिहायशी इलाकों में एक किलोमीटर की परिधि के अन्दर प्राथमिक और 75 प्रतिशत रिहायशी इलाकों में तीन किलोमीटर के अन्दर उच्च प्राथमिक पाठशाला है। इन सबके पश्चात् भी वर्तमान में लाखों बालक शिक्षा की मुख्यधारा से वंचित हैं। इसके बावजूद आज भी हमारे विद्यालय ऐसे बालकों के लिए साधनहीन नज़र आते हैं जिनकी विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों, शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारणों के कारण उनकी कुछ विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताएँ हैं।

1.1.2. समावेशी शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Inclusive Education)

समावेशन शब्द का अपने आप में कुछ विशेष अर्थ नहीं होता है। समावेशन के चारों ओर जो वैचारिक, दार्शनिक, सामाजिक और शैक्षिक ढाँचा होता है वही समावेशन को परिभाषित करता है। समावेशन की प्रक्रिया में बच्चों को न केवल लोकतंत्र की भागीदारी के लिए सक्षम बनाया जा सकता है बल्कि उन्हें यह सीखने एवं विश्वास करने के लिए सक्षम बनाया जाता है कि लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए दूसरों के साथ रिश्ते बनाना, अन्तःक्रिया करना भी समान रूप से महत्वपूर्ण है।

वर्तमान में विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बालकों के लिए शिक्षा में दो प्रकार की व्यवस्थाएँ हैं। पहली वह जिन्हें हम विशेष विद्यालय कहते हैं, जो ज्यादातर शहरों में स्थित हैं जिनका उद्देश्य केवल एक प्रकार के विशिष्ट बालकों की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करना है। दूसरी वह जिन्हें अन्य सभी बालकों के साथ आस–पड़ोस के सामान्य विद्यालयों में भेजा जाए और वहीं उनकी विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने की व्यवस्था की जाए।

यहाँ पर समावेशी शिक्षा से तात्पर्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली से है जिसमें प्रत्येक बालक को चाहे वह विशिष्ट हो या सामान्य, बिना किसी भेदभाव के एक साथ ही एक ही विद्यालय में सभी आवश्यक तकनीकों व सामग्रियों के साथ उनकी सीखने और सिखाने की आवश्यकताओं को पूरा किया जाए।

समावेशी शिक्षा केवल अशक्त व्यक्तियों के लिए नहीं है बल्कि सभी को समान रूप से शिक्षा प्रदान करना समावेशी शिक्षा का उद्देश्य है। सच यह है कि अशक्त बालक वर्ज का मुख्य शिकार रहे हैं। ये बालक शैक्षिक अलगाव को मुख्य रूप से स्पष्ट करते हैं।

UNESCO की पूरी रिपोर्ट के अनुसार अपवर्जन से ग्रसित बालकों का 37% आर्थिक दृ से हीन बालक होते हैं। ये बालक ऐसे 35 राष्ट्रों के उन राज्यों/क्षेत्रों से सम्बन्ध रखते जिन्हें आर्थिक सहयोग तथा विकास संगठन (Organisation for Economic Corporatio and Development) ने हीन या निम्न श्रेणी के अन्तर्गत चिह्नित किया है। समावेशी शि का आन्दोलन सभी नागरिकों की समानता के अधिकार को पहचानने और सभी बाल को समावेशी आवश्यकताओं के साथ–साथ शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने के रूप देखा जाता है कि उन्हें कम नियन्त्रित तथा अधिक प्रभावशाली वातावरण में शिक्षा दे चाहिए।

Scanned by TapScanner

जनसंख्या विस्फोट के साथ विद्यालयों में छात्रों की विभिन्नता में भी अत्यधिक वृद्धि होती है। छात्रों की विभिन्नता निम्न प्रकार की होती हैं– सामाजिक, आर्थिक स्तर, बौद्धिक, संवेगात्मक, शारीरिक तथा मानसिक गुणों में विभिन्नता, माता–पिता की शिक्षा, व्यवसाय तथा पर्यावरण निवास–क्षेत्र, भाषा, धर्म, संस्कृति की विभिन्नता आदि। इन विभिन्नताओं को स्वीकार करना सहजना, समेटना तथा प्रत्येक छात्र को उसकी आवश्यकताओं के अनुसार बढ़ने, शिक्षा ग्रहण करने तथा विकसित होने के उपयुक्त अवसर देना समावेशी शिक्षा का दूसरा नाम है।

माइकल एफ. फिनग्रेस के अनुसार, "समावेशी शिक्षा मूल्यों, सिद्धान्तों तथा अभ्यासों का एक समूह है जो सभी बालकों के लिए, चाहे वह विशिष्टता रखते हों या नहीं रखते हों, प्रभावशाली तथा अर्थपूर्ण शिक्षा की खोज करता है।

According to Michael F. Fiangrace, "Inclusive education is a set of values, principles and practices that seeks more effective and meaningful education for all students, regardless of whether they have exceptionality labels or not."

स्टेनबैक तथा स्टेनबैक के अनुसार, "समावेशी विद्यालय से तात्पर्य ऐसे स्थान से है जहाँ प्रत्येक बालक को उसके साथियों तथा विद्यालय समुदाय के अन्य सदस्यों द्वारा स्वीकार किया जाता है व सहारा दिया जाता है जिससे कि वह अपनी शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके।"

According to Stainback and Stainback, "Inclusive school or setup may be defined as a place where everyone belongs is accepted, supports and is supported by his or her peers and other members of the school community in the course of having his or her educational needs."

उमा तली के शब्दों में, "समावेशन एक प्रक्रिया है, जिसमें प्रत्येक विद्यालय बालकों की दैहिक, संवेगात्मक तथा सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने संसाधनों का विस्तार करता है।"

यूनेस्को के शब्दों में, "समावेशी शिक्षा वर्जन के लिए अति संवेदनशील तथा सीमान्त स्थित सभी अधिगमकर्ताओं की शिक्षा के अवरोधों को हटाने से सम्बधित है। यह एक प्रतिमानित उपागम है जिसे सभी बालकों की शिक्षा में सफलता के लिए निर्मित किया गया है। इसका सामान्य उद्देश्य व्यक्ति के शिक्षा के अधिकार के सभी अपवर्जन को कम करना तथा निराकरण करना है। कम से कम प्राथमिक स्तर शिक्षा से तथा इस प्रकार सभी के लिए प्राथमिक गुणात्मक शिक्षा तक पहुँच, भागीदारी तथा सीखने में सफलता को सम्भव बनाना है।"

स्टीफन तथा ब्लैकहर्ट के अनुसार, "शिक्षा की मुख्य धारा का अर्थ बाधित (पूर्ण रूप से अपंग नहीं) बालकों की सामान्य कक्षाओं में शिक्षण व्यवस्था करना है। यह समान अवसर मनोवैज्ञानिक सोच पर आधारित है जो व्यक्तिगत योजना के द्वारा उपयुक्त सामाजिक मानकीयकरण और अधिगम को बढ़ावा देती है।"

According to Stephen and Blackhurt, "Mainstreaming is the education of mildly handicapped children in the regular classroom. It is based on the philosophy of 'equal' opportunity that implemented through individual planning to promote appropriate learning, achievement and social normalisation."

Scanned by TapScanner